International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
Volume 35, Issue 02 and Publication Date: 22nd April, 2023
An Indexed, Referred and Peer Reviewed Journal
ISSN (Online): 2347-601X
www.ijemhs.com

गांधी जी के वर्ग समन्वय से संबंधित आर्थिक चिंतन का सैद्धांतिक अनुशीलन

नवीन कुमार 'नवीन'
शोध छात्र, इतिहास विभाग, बी. एन. एम. यू., मधेपुरा, बिहार

सार

समाज और समाज के साथ जुड़ी हुई अनेक समस्याओं जो समय–समय पर उत्पन्न हुआ करती है उनके निवारण के लिए समाज में अनेक सिद्धान्त बनते और बिगड़ते हैं। कुछ ऐसे सिद्धान्त होते हैं जिनमें समय के साथ निखार आता जाता है और कुछ ऐसे कि उनपर समय की गर्द बढ़ती जाती है और वे दफन हो जाते हैं। गाँधीजी उन विचारकों में से थे, जिन्होंने समाज को एक दूसरी नजर से देखा। उनकी समस्याओं के समाधान किया, जिसे ''सर्वोदय'' की संज्ञा दी गयी। उनके सर्वोदय की इस धरणा को संत विनोबा ने अपने खून और पसीना से सींचकर पल्लवित और पुष्पित किया और लोकनायक जयप्रकाश ने उसमें अपना अनन्य सहयोग देकर जन–जन तक पहुँचाया। सर्वोदय के विचार को गाँधी के वर्ग समन्वय के ही प्रयासो का चरम प्रस्तुति मान सकते हैं।

विस्तार

सर्वोदय सर्व उदय के मेल से बना है। सर्व का अर्थ सभी तथा उदय का अर्थ है उन्नति अर्थात् सर्वो की उन्नति। इसका तात्पर्य है सभी व्यक्ति का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं आस्मिक उदय और उत्थान। अतएव यह सम्पूर्ण विश्व के प्राणी के लिए कल्याणकारी आधार है। इसमें किसी भी वर्ग की उपेक्षा नहीं की जाती वरन् इसका परम उद्देश्य है सबका कल्याण सबका हित। ''जियो और जीने दो'' के दर्शन को उसने एक नया मोड़ दिया। सर्वोदय उनसे भी एक कदम अग्रणी बनकर ''तुम दूसरों को जिलाने के लिए जियो'' का सिद्धान्त प्रस्तुत करता है। यह भारतीय भावना है। यह त्याग की भावना है, जिसमें, प्रेम, अहिंसा अपरिग्रह, संरक्षता का सिद्धान्त आदि सभी तो है। यह सभी मानव को शिक्षा देते हैं कि दूसरों से प्रेम करो, दूसरों के प्रति सोचे और अच्छा काम करो। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुखी बनाओ। दूसरों की सेवा करना ही मानव जाति का परम धर्म एवं लक्ष्य है।

सर्वोदय की भावना अति प्राचीन है। विद्वानों ने इसे हिन्दू सभ्यता का आधार–शिला माना है। त्रेता युग में रामचन्द्र जी के समय में इसका आदर्श समुज्जवल था। समाज में न तो घृणा थी न शोक, शांति एवं समृद्धि के लिए सबों में परस्पर समन्वयन था। द्वापर में महाभारत काल काल में स्वार्थ और घृणा का प्रवेश हो गया फलस्वरूप समाज एवं धर्म में परिवर्तन आया, स्वार्थी मानवों का नैतिक पतन हुआ। तत्पश्चात् गौतम बुद्ध इसे पुनः प्रतिष्ठापित करने की दिशा में अग्रसर हुए। उन्होंने मानव जीवन के दुःख से दुःखी होकर तपस्या कर ज्ञान प्राप्त किया। अहिंसा, प्रेम और आत्म बलिदान का प्रचार कर सर्वोदय की भावना को भव्य बनाया। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में व्यक्त किया है – ''सियाराम मय सब जग जानी'' इस सिद्धान्त का मूल मंत्र स्वरूप प्राचीन श्लोक सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'' इसी का द्योतक करता है।

अतः सर्वोदय भारत के लिए नवीन नहीं अपितु प्राचीन सिद्धान्त है। वर्तमान युग में सर्वोदय के आलोक का केन्द्र बिन्दु विश्वबन्धु बापू माने जाते हैं, जिन्हें रस्किन की पुस्तक ''अनटू दि लास्ट ने इस भावना को जन्म दिया। जिनके जीवन का मूल मंत्र था – बहुजन हिताय बहुजन सुखाय।'' उन्हें स्पष्ट रूप से यह दृष्टिगोचर हो गया कि सर्वो की आत्मा एक ही है, बाह्य रूप में अन्तर है। अवएव उन्होंने सर्वोदय की भावना को सबल रूप देने के लिए अपने राम राज्य की कल्पना को आधार बनाया। इस कल्याण के आधार पर उन्होंने एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहा जिसमें सत्य, अहिंसा प्रेम हो, जिसमें व्यक्ति व्यक्ति का शोषण न करे, सहयोग और समानता की भावना से परस्पर मिले। महात्मा गाँधी के इस सपने को साकार करने के लिए संत विनोबा ने सर्वोदय समाज के कार्य–भार को लेते हुए कहा – ''सर्वोदय का अर्थ है सर्वसेवा के माध्यम से समस्त प्राणियों की उन्नति। राज्य, शक्ति, धन आदि तब तक मानव जाति का कल्याण नहीं कर सकते, जब तक मानवीय शक्ति का प्रयोग बिना किसी भेद–भाव के मानव जाति के लिए नहीं किया जाता है। अस्तु सर्वोदय मानव और मानव शक्ति को प्राथमिकता एवं महत्व देता है। इसमें राजा और रंक दोनों समान होता है। डॉ0 वी0 एन0 सिंह लिखते हैं – ''सर्वोदय भारत की एक पवित्र नदी के समान है जो हर भूमि को समान

दृष्टिकोण से सींचना चाहती है, चाहे वह असर हो या उर्वरा।'' जयप्रकाश नारायण ने इसी तीसरी शक्ति अर्थात् प्रेम शक्ति की संज्ञा दी है।

इस हेतु यह आवश्यक है कि मानव निश्छल एवं पवित्र हृदय से मानव को मानव समझे तथा पारस्परिक सहयोग एवं कल्याण की भावना को अपनाकर सामुदायिक जीवन की उन्नति के प्रयास करे और प्रयत्नशील रहे। स्वार्थ त्याग कर उदारता को अपनावे। सामाजिक जीवन के उज्जवलतम् सिद्धान्त को अपनाकर दूसरे के लिए जीए स्वयं के लिए नहीं, यही सर्वोदय का मूल मंत्र का अर्थ है।

सर्वोदय की मुख्य भावना है कि वह अयोग्य व्यक्ति को योग्य बनाये। यह अयोग्यता चाहे ज्ञान के सम्बन्ध में हो और चाहे व्यवसाय के सम्बन्ध में। प्रत्येक व्यक्ति को इस योग्य बनाना है कि वह स्वावलंबी बन सके–आत्म निर्भर हो सके।

सर्वोदय का महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रेम और अहिंसा है। जिसे गाँधीजी के विचारों की रीढ़ कही गई है। गाँधीजी का सम्पूर्ण दर्शन प्रेम और अहिंसा पर आधारित है। सर्वोदय समाज उससे कैसे अछूता रह सकता है। इस समाज की उन्नति प्रेम और अहिंसा के द्वारा ही हो सकती है। जिसे समाज में उसका अभाव होता है – संभवतः वह समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता है। यही संघर्ष स्वाभाविक है। गाँधीजी के अनुसार – ''प्रेम स्वाभाविक है।'' दादा धर्माधिकारी इसकी आलोचना करते हुए करते हैं – ''संघर्ष यदि मानव इतिहास है, तो वह मनुष्य के स्वभाव का इतिहास नहीं है, बल्कि उसके दोषों का इतिहास है। स्वभाव से प्रतिकूलताओं का इतिहास है।''

गाँधीजी उन मूल्यों की स्थापना चाहते थे जो सभी लोगों पर समान रूप से लागू करे जा सके। मानवीय मूल्य सत्य, अहिंसा और प्रेम के द्वारा स्थापित किये जा सकते हैं। जहाँ पर ये होंगे वहीं भाई–चारा, सहयोग, सेवा–भावना होंगे तथा उन वस्तुओं और भावनाओं का अभाव होगा जो व्यक्तियों की उन्नति के मार्ग में बाधक सिद्ध होते हैं। उन समस्त बाधओं रूकावटों, भेद–भाव आदि को पारस्परिक प्रेम की भावना से विलय करने का प्रयत्न किये जाये तभी व्यक्तियों के समान हितकर मूल्यों की स्थापना हो सकेगी।

अतः यह स्पष्ट है कि सर्वोदय का मौलिक सिद्धान्त है – ऐक्य–भाव, जिसका आधार है – एकता, भातृत्व एवं अहिंसा का भाव। जिसके फलस्वरूप विश्वशांति की स्थापना सुलभ हो सकती है। स्वतंत्रता सर्वोदय का प्रथम सोपान है। स्वतंत्रता प्राप्ति कर व्यक्ति युक्त वातावरण में विचरण करता है। जिससे उसका विकास होता है। सत्य–निष्ठा व्यक्ति को आगे बढ़ने में सम्बल प्रदान करती है। अहिंसात्मक भावना व्यक्ति को सभी दुर्गुणों से मुक्त करती है। फलतः सत्य अहिंसा और प्रेम पर आधरित सर्वोदय सिद्धान्त विश्वजनीन और शाश्वत है।

सर्वोदय समाज तथा उसकी व्यवस्था में किस प्रकार का सामाजिक स्वरूप होगा, उसे विद्वानों ने निम्न तथ्यों से जानने की कोशिश की हैः–

गाँव की भूमि पर किसी व्यक्ति का एकाधिकार नहीं होगा। बल्कि गाँव की संपूर्ण भूमि पर गाँव सभा का अध्किार होगा। कुछ भूमि को परिवार में बाँट दी जायेगी, जैसे चारागाह, वन और बची हुई भूमि। गाँव सभा का यह दायित्व है कि वह अपने अधीन सभी भूमि की देख–रेख करे। गाँवों में सहकारी समितियाँ भी उपस्थित की जायेगी जो किसानों को बीज, खाद रूपया आदि की सुविधाएँ देगा तथा उनके अन्न को उचित दामों पर बिकवाने के लिए प्रयत्न करेगा।

उस समाज में सभी श्रमिक होंगे कोई भी मालिक नहीं होगा और न उस समाज में वे समस्याएँ होगी जो पूँजीवाद में देखी जाती हैं। इस व्यवस्था में उन्हीं उद्योगों को किया जायेगा, जिससे क्षेत्रीय अधिकार, व्यापारों को किसी प्रकार का आघात न पहुँचे क्योंकि स्वावलम्बन संबंधी उद्योगों को किसी प्रकार का ठेस न पहुँचे। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्हीं वस्तुओं का व्यापार किया जायेगा जिनका उत्पादन आवश्यकता से अधिक होता है।

देश भर में भी मोटर, रेल, जहाज, आदि का निर्माण किया जायेगा, जिससे गाँव तथा नगर के बीच सम्बन्ध कायम रहे। यातायात के साधनों में उन्नति स्वतः क्षेत्रीय स्वावलम्बन के साथ जुड़ी हुई हैं।

गाँव में पशुपालन को प्रोत्साहित किया जायेगा, क्योंकि गाय और भैंस–बैल दोनों ही कृषि व्यवसाय के अभिन्न अंग हैं। बैल के द्वारा आज भी ग्रामीण किसान खेत की जुताई करता है और गाय का अपना विशिष्ट स्थान और महत्व है।

ग्रामीण समाज में बुनियादी और प्रौढ़ शिक्षा का यथा संभव प्रसार किया जायेगा। बुनियादी शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी को शिक्षा के साथ–साथ स्वावलम्बी बनने का भी प्रशिक्षण दिया जायेगा। उसे उत्पादन का एक महत्वपूर्ण काई बनाया जायेगा। प्रौढ़ शिक्षा के माध्यम से उन बड़े व्यक्तियों को जिनकी आयु अब शिक्षा ग्रहण करने की नहीं हैं उन्हें मौलिक रूप से देश विदेश की महत्वपूर्ण बातें समझाई जायेंगी इससे उन्हें अपने समाज और काम को समझने में सुविधा प्राप्त होगी।

गाँव में डॉक्टरों और चिकित्सालयों की पर्याप्त सुविधा दी जायेगी। स्थान–स्थान पर प्रसूति घर होंगे। डाक्टरों का उद्देश्य ध्न को एकत्रित करना का नहीं होगा, बल्कि उनका मुख्य कर्त्तव्य और उद्देश्य जन सेवा करना होगा।

ग्रामीण समाज में जो बैंक स्थापित किये जायेंगे, उनका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण जनता के ध्न को बचाना और उसी ध्न को उन्हीं की उन्नति के लिए प्रयोग करना होगा। इस तरह उसका धन उसी कार्य और उन्नति में लगेगा।

गाँव सभा को यह अधिकार होगा कि वह विभिन्न प्रकार के कर लगाये तथा उन्हें वसूल भी करे। इस समाज में सारे कर प्रत्यक्ष ही होंगे अप्रत्यक्ष कर की कोई व्यवस्था नहीं है। कर की अदायगी नगद अथवा उपज के रूप में भी दी जा सकती है। इस तरह कर व्यवस्था इस प्रकार की नहीं होंगी, जिससे जनता को किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचे।

सर्वोदय समाज निरंतर युद्ध का विरोध करता है क्योंकि उसकी आस्था हिंसा में नहीं अहिंसा में है। वह अपनी समस्त समस्याओं का समाधन अहिंसात्मक ढ़ंग से ही करता है। वह शांति और विश्व बन्धुत्व में विश्वास रखता है और उसी को स्थापित करने के लिए प्रयत्न करता है।

इस प्रकार सर्वोदय समाज का स्वरूप ऐसा है जिसमें ग्रामीण समाज को किसी भी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अन्य पर अवलिम्बत रहना नहीं पड़ेगा।

''माँगे वारिद देहि जल'' रामचन्द्र के राज की भाँति गाँव अपनी स्वेच्छा से अपने ढ़ंग से अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है।

सर्वोदय का उद्देश्य किसी एक क्षेत्र में उन्नति करने का नहीं है, बल्कि वह समाज का सर्वांगीण विकास करना चाहते हैं। सर्वोदय समाज के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित माने गये हैं –

यह समाज अपने व्यक्तियों को उस तरह से प्रशिक्षित करेगा कि व्यक्ति बड़ी से बड़ी कठिनाईयों में भी अपने साहस धैर्य को त्याग न सके। उसे यह सिखाया जायेगा कि वह कैसे जियें तथा सामाजिक बुराईयों से कैसे बचें। इस तरह सर्वोदय समाज का व्यक्ति अनुशासित और संयमी हों।

यह समाज इस प्रकार की योजनाएँ बनाएगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति को नौकरी मिल सके अपना कोई ऐसा कार्य मिल सके जिससे उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। उस समाज में प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना पड़ेगा। सर्वोदय समाज में शारीरिक श्रम का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि गाँधीजी कहते थे – जो काम करेगा वही खायेगा।

सर्वोदय समाज पाश्चात्य देशों की तरह भौतिक सम्पन्नता और सुख के पीछे नहीं भागता है और न उसे प्राप्त करने की इच्छा ही प्रकट करता है, किन्तु इस बात का यह प्रयत्न करती है कि सर्वोदय समाज में रहने वाले व्यक्तियों की आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति अवश्य हो। इन आवश्यकताओं में मुख्य हैं – रोटी, कपड़ा, शिक्षा आदि ये वे सामान्य आवश्यकताएँ हैं जो प्रत्येक व्यक्ति की है और जिनकी पूर्ति होना आवश्यक है।

सर्वोदय समाज की शिक्षा पद्धति में विविधता नहीं होगी, वह बालकों को बगैर किसी भेद – भाव के समान शिक्षा देगी। यह शिक्षा केवल पुस्तकीय नहीं होगी, किन्तु बालक को आरंभ से ही उत्पादन का एक ईकाई बनाने का प्रयास किये जायेंगे। सामान्य शिक्षा का उद्देश्य बालकों में समान भावना और प्रवृत्ति को उत्पन्न करना है।

गाँधीजी का कहना था कि सत्ता का विकेन्द्री करण सभी क्षेत्रों में समान रूप में करना चाहिए, क्योंकि दिल्ली का शासन भारत के प्रत्येक गाँव में नहीं पहुँच सकता है। वे आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में सत्ता का विकेन्द्रीकरण करने के लिए प्रयत्नशील थे।

सर्वोदय समाज का यह उद्देश्य है कि वह देश के प्रत्येक भाग को स्वावलम्बी बनाना चाहता है, क्योंकि देश के एक भाग में उन्नति होने से देश के सारे भाग स्वावलम्बी नहीं बन सकते हैं, जब तक प्रत्येक क्षेत्र स्वावलम्बी न बन जाए। कम–से–कम प्रत्येक क्षेत्र में उतनी चीजें अवश्य उत्पन्न होने लगें, जितनी उस क्षेत्र की वस्तुओं की आवश्यकताएँ हैं। क्षेत्रा के व्यक्तियों का यह कर्त्तव्य है कि वह उन चीजों को उत्पन्न करें अथवा उत्पादन करे जो उनके जीवन के लिए परमावश्यक है।

इस समाज में रहने वाले व्यक्ति आत्म संयमी, धैर्यवान अनुशासन प्रिय होते हैं तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति से दूर रहते हैं। इस समाज के व्यक्ति क्योंकि भौतिक सुखों की पीछे भागते नहीं है, इसलिए उनके व्यक्तियों में न तो संघर्ष है और न शोषण की प्रवृत्ति दी। यह अपने पास उतनी ही वस्तुओं का संग्रह करते है, जितनी उनकी आवश्यकताएँ हैं।

गाँधीजी का कहना था कि भारत के गाँवों को संचालन दिल्ली की सरकार नहीं कर सकती है। गाँव का शासन लोकनीति के आधार ही होना चाहिए, क्योंकि लोकनीति गाँव के कण–कण में व्याप्त है। लोकनीति बचपन से ही व्यक्ति को कुछ कार्य करने के लिए प्रेरित करती है और कुछ कार्यों को करने से रोकती है, इस तरह व्यक्ति स्वतः अनुशासन प्रिय बन जाता है।

''सर्वोदय का उद्देश्य किसी एक क्षेत्र में उन्नति करने का नहीं है, बल्कि सभी क्षेत्रों में समाज रूप से उन्नति करने का है। वह अगर व्यक्ति आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कटिबद्ध है तो व्यक्ति को सत्य, अहिंसा और प्रेम का पाठ पढ़ाने के लिए भी दृढ़ संकल्प है।''

सर्वोदय के सिद्धान्त, स्वरूप और उद्देश्य को देखने से यह स्पष्ट होता है कि ''सर्वोदय एक उत्कृष्ट और सर्वव्यापक भावना को प्रदर्शित करने वाला एक ऐसे समाज की हिमायती है जिसमें सभी वर्गों, व्यक्तियों, समूहों तथा वर्णों का सर्वांगीण विकास हो,'' सभी के लिए समान दृष्टिकोण रखनेवाला यह समाज ऐसी शक्ति रखेगा जिसमें बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पी सके।

समाज शास्त्रीय अध्ययन में सामाजिक संरचना का आधार – चाहे वह समाज व्यवस्था किसी भी तरह की क्यों न हो– उसकी अर्थनीति के आधर पर गठित उत्पादन प्रणाली ही होती है। मानव समाज उत्पादन की कई प्रणालियों से – जिसे अर्थशास्त्री और समाजशास्त्री आदिम कालीन, दास प्रथा, सामंती पूँजीवादी, समाजवादी आदि का नाम दिए हैं – गुजरते हुए आज के युग में पदार्पण किया है। प्रत्येक उत्पादन प्रणाली का अपना उत्पादन सम्बन्ध था और उत्पादन सम्बन्धों के आधर पर गठित सामाजिक संरचना ने एक खास स्वरूप ग्रहण किया था। यही उस उत्पादन व्यवस्था की विशेषता कही जा सकती है। इस आधर पर गाँधीवादी समाज व्यवस्था के आर्थिक आधार भी हैं जिनका एक खास ढंग के उत्पादन संबंधों के आधार पर एक सामाजिक संरचना का निर्माण करना उद्देश्य रहा रहा है।

एक समाज दर्शन के रूप में गाँधीवाद का अविर्भाव एक खास काल विशेष में हुआ था, जिसकी अपनी खास विशेषताएँ थी और वह महत्वपूर्ण ढ़ंग से नई उत्पादन वस्तुस्थितियों के अनुरूप दर्शन, अर्थ रचना, समाज रचना से लेकर उत्पादन की वर्तमान प्रक्रियाओं को प्रभावित कर रही थी। ऐसी स्थिति में गाँधी ने अपनी सामाजिक संरचना के लिए, जिसे उन्होंने राम राज की संकल्पना में चित्रित किया, एक आर्थक आधार की खोज किया तो सम्पत्ति के स्वामित्व से लेकर समाज रचना तक की एक आर्थिक दर्शन को सामने रखा।

उपसंहार

गाँधी का भारतीय राजनीति में उस समय पदार्पण हुआ जब प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था। युद्ध के चरित्र के सम्बन्ध में एक मान्य विचार वामपंथी राजनीति लेकर आगे आई थी और यह विचार सर्वहारा के वर्ग संघर्ष की अवधरणा का साम्राज्यवादी मुल्कों के बीच बढ़ते अन्तर्विरोधों के परिप्रेक्ष्य से जन्मा था और यह

विचारधारा थी युद्ध को साम्राज्यवादी युद्ध के रूप में चित्रांकन करना।[1] सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के सिद्धांत के तहत, भारत में जो प्रगतिशील विचार आ रहे थे, इसके बावजूद की साम्राज्यवादी शासन ने इनके भारत में प्रवेश पड़ कड़ी पाबंदी लगाई थी, उनमें स्पष्टतः एक ऐसे समाज के निर्माण की परिकल्पना थी, जहाँ उत्पादन के साध्नों के व्यक्तिगत स्वामित्व की प्रणाली को नकारा गया था और शोषण के हर संभव तरीकों की समाप्ति के लिए सम्पत्ति के पूँजीवादी स्वामित्व की प्रणाली को समाप्त करने का नार था। विश्व के सारे श्रमिकों की एकता का नारा – 'दुनिया के मजदूरों एक हो' श्रमिक वर्ग का एक मान्य नारा बनता जा रहा था और पूँजीवाद पर संगठित हमले की जिस कार्यनीति को अपनाने का कार्यक्रम कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल ने दिया था।[2] इस नारे को प्रथम विश्वयुद्ध में लागू करने का प्रयास प्रगतिशील ताकतें कर रही थी। प्रगतिशील और क्रांतिकारी कार्यनीतियों को सही रूप में स्थापित करने का काम लेनिन जैसे कई नेता कर रहे थे।

–: संदर्भ :–

1. ऐसे सिद्धांत के प्रति पूर्ण विवरण देखा जा सकता है – के0 मार्क्स और एफ ऐंगिल्स, कलेक्टेड वर्क्स (तीन भागों में), भो0–1, (मास्को, 1969) पृ0 17 के आगे।
2. दि जेनरल काउन्सिल ऑफ दि फर्स्ट इन्टरनेशनल 1864–1866, मिनट, पृ0 346.